स्वतंत्रता आंदोलन में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका

सुनील कुमार मिश्र

प्रवक्ता - इतिहास ,

फुंदी सिंह लौना राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय जालौन

जनपद जालौन (उत्तर प्रदेश)

सारांश – भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का उदय 19वीं सदी से आरंभ हुआ। 19वीं सदी भारत के इतिहास में सामाजिक- आर्थिक संक्रमण का समय था जिसमें आधुनिक भारत का अभ्युदय हुआ। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनता को जागरूक करने में पत्रकारिता का योगदान महत्वपूर्ण रहा। पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रवाद को नया आयाम मिला।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पत्र–पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता कर रहे प्रत्येक व्यक्ति को कलम की ताकत की प्रतीती थी। राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, पंडित मदन मोहन मालवीय, मौलाना अबुल कलाम एवं हिंदी साहित्य जगत के बड़े–बड़े साहित्यकार सीधे तौर पर पत्र–पत्रिकाओं से जुड़े थे और नियमित लेख लिख रहे थे, जिसका प्रभाव भारतीय जनता के मानस पटल पर पड़ रहा था। जिसका एहसास अंग्रेजी सरकार को पहले से ही था। लिहाजा उसने प्रारंभ से ही प्रेस के दमन की नीति अपनाई हुई थी। राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अनेक यातनाएं झेली हैं, किन्तु वे अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। स्वतंत्रता पूर्व की हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति शक्ति एवं दिशा प्रदान करने की महती भूमिका का निर्वाह किया।

शब्द कुंजी – बहिष्कार, स्वदेशी, स्वाधीनता, स्वराज, बहुजन, संग्राम, मुद्रण, लोकसमुदाय।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है। स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य पत्रकारिता के कारण संभव हो पाया है। पत्रकारिता उस समय व्यवसाय नहीं थी, एक जिम्मेदारी थी। इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए पत्रकारों ने हर तरह से कीमत चुकाई, परंतु अपने कर्तव्य में डटे रहे। पत्रकारिता के द्वारा राष्ट्रवाद को नया विस्तार मिला।

भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास 19वीं सदी में प्रारंभ हुआ। पत्रकारिता के माध्यम से लोक समुदाय तक आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक गतिविधियों का परिचय दिया गया। पत्रकारिता की शक्ति से समाज की कमियों, कुरीतियों, अंधविश्वास, गुलामियों, ऊंच–नीच की भावनाओं को दूर करने का प्रयास किया गया। उन्नीसवीं सदी में राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षाओं को वाणी देने वाले पत्र और पत्रकारों ने जन–जन को राजनीति की दिशा दिखाई और संस्कृति के गौरव का स्मरण कराया। जिसके कारण उनमें राष्ट्रीय नवजागरण हुआ।

भारत में मुद्रण कला (प्रेस) की स्थापना पुर्तगालियों द्वारा की गई थी। इस संदर्भ में डॉ. अवधेश कुमार का कहना है कि "भारत में सन 1556 में पुर्तगालियों के माध्यम से प्रेस का प्रयोग आरंभ किया गया जिसे सर्वप्रथम गोवा में स्थापित किया गया। सन 1557 में भारत में सर्वप्रथम "ट्राक त्रिनिकिटीनों," नामक पुस्तक प्रकाशित की गई।"परंतु भारत में पत्रकारिता विकसित करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है।

अंग्रेजों का बंबई (1672), मद्रास (1772) और कलकत्ता (1779) में प्रेस की शुरुआत की। सर्वप्रथम जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 29 जनवरी, 1778 ई. में **"हिक्की गजट"** अथवा **"बंगाल गजट"** प्रकाशित किया **जो "कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर"** के नाम से भी जाना जाता है। यह एक साप्ताहिक पत्र था जो कि अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था।

हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत **"जुगल किशोर शुक्ल"** द्वारा संपादित **"उदंत मार्तण्ड"** 30 मई 1826 कलकत्ता से प्रकाशित पत्रिका से माना जाता है। यह एक साप्ताहिक पत्र था। प्रारंभिक काल के प्रमुख हिंदी पत्र-उदंत मार्तण्ड (1826), राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द का **"बनारस अखबार"** (1845), प्रेमनारायण का मालवा अखबार (1848), तारा मोहन द्वारा संपादित **"सुधाकर"** (1850), मुंशी सदा सुखलाल का **"बुद्धिप्रकाश"** (1852), मुंशी लक्ष्मण दास का **"ग्वालियर गजट"** (1853), श्याम सुंदर का **"समाचार सुधावर्षण"** (1854), राजा लक्ष्मण सिंह का **"प्रजाहितैषी"** (1855), बाबू श्रीलाल का **"जीयाजी प्रताप "** (1855), शिवनारायण का **"सर्वहितकारक"** (1855), ग्रंथ सभा का बुद्धिवर्धक ग्रंथ (1856), लक्ष्मीलाल का राजपूताना अखबार (1857), अजीमुल्ला का **"पया में आजादी"** (1857), नवीन चन्द्र राय का **"ज्ञान प्रदायिनी** पत्रिका" (1866), तत्वबोधिनी पत्रिका (1865) आदि। ये सभी पत्र-पत्रिकाएं राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत थी। इन पत्रों के मुख्य स्वर, समाज सुधार, राष्ट्रीयता, क्रांति की भावना एवं विदेशी शासन के विरुद्ध विरोध का स्वर मुखर हो रहा था।

पत्रकारिता का गांधी तिलक युग -

बाल गंगाधर तिलक की पत्रकारिता ने 20वीं सदी के प्रारंभ में स्वराज की भूख पैदा की और समूची सांस्कृतिक संवेदना को प्रभावित किया। वे तब भारत के आत्मनिर्भर होने की बात कर रहे थे और स्वराज को स्वदेशी से जोड़कर लोगों को जागरूक करने में जुटे थे। बाल गंगाधर तिलक की पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक बनाने का कार्य किया। तिलक एवं विष्णु शास्त्री चिपलूणकर के द्वारा 1881 में मराठी भाषा में **"केसरी"** और अंग्रेजी में **"मराठा"** नामक साप्ताहिक समाचार पत्र की शुरुआत की। लोकमान्य तिलक की प्रखर लेखनी ने केसरी और मराठा को पत्रकारिता के जगत में बड़ी पहचान दी। दोनों ही अखबार स्वतंत्रता आंदोलन का **"अग्निमंत्र"** बन गया। **"केसरी"** के संबंध में तिलक जी की राय - **"केसरी"** निर्भीक एवं निष्पक्ष रूप से सभी प्रश्नों की चर्चा करेगा। ब्रिटिश शासन की चापलूसी करने की जो प्रवृत्ति आज दिखाई देती है, वह राष्ट्रहित में नहीं है। "केसरी" के लेख इसके नाम को सार्थक करने वाले होंगे।

बाल गंगाधर तिलक ने **"केसरी"** के माध्यम से अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध जनता में राष्ट्रीय चेतना की अलख जगाई। दिशाहीन, निराश जनता में सम्पूर्ण स्वाधीनता का भाव जगाया और अपनी सिंहवत गर्जना के साथ उद्घोष किया -

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा।"

स्वदेशी, स्वराज, स्वाधीनता, बहिष्कार ये सभी शब्दांश तिलक जी की राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत मुखर पत्रकारिता को देने हैं। लोकमान्य तिलक ने ही **"केसरी" और "मराठा"** के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन का आह्वान किया। तिलक ने ही "केसरी" के माध्यम से **"गणेश उत्सव", "शिवाजी उत्सव",** स्वदेशी के उपयोग में लोगों से भागीदार बनने की अपील की।

तिलक जी की पत्रकारिता राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत थी। स्वतंत्रता प्राप्ति ही उनकी पत्रकारिता का प्रमुख स्वर था। इसी कड़ी में महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रीय संग्राम के निर्णायक सोपान की एक प्रखर कड़ी बने और गांधी जी ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए पत्रकारिता को माध्यम के रूप

में चुना। गांधी जी की पत्रिकाएं हैं- **नवजीवन, हरिजन, आज सौराष्ट्र खादी समाचार, खादी जगत, खादी प्रचार, नई तालीम, सबकी बोली,** राष्ट्रभाषा, हिन्दी प्रचारक, नया-हिंद हरिजन सेवक, नशा बंदी, नशा बंदी संदेश, जीवन साहित्य, गांधी-मार्ग, भारतीय-राय, सर्वोदय, गांधी आदि। इन सभी पत्र-पत्रिकाओं का मुख्य स्वर समाज सुधार, स्वाधीनता आंदोलन का जनजागरण था।

गांधी जी स्वयं पत्रकार थे। गांधी जी के अनुसार पत्रकारिता वैचारिक-क्रांति का एक शक्तिशाली एवं सशक्त माध्यम है। इस युग में गांधी जी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से जन-जागरण, सत्याग्रह एवं अछूतों का उद्धार का कार्य आरंभ किया। "**हरिजन**" और "**नवजीवन**" पत्र के माध्यम से गांधी जी ने तो एक नये युग और सामाजिक क्रांति का उद्घोष किया। गांधीवादी पत्रकारिता से प्रभावित एवं स्वतंत्रता संग्राम स्वराज की भावना से ओत-प्रोत विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी जिसका मुख्य स्वर स्वराज था। जैसे- जबलपुर से "**कर्मवीर**", आगरा से "**सुधाकर**" प्रयाग से "**हिंदुस्तानी अखबार**", कलकत्ता से "**क्षत्रिय मार्तण्ड**", काशी से "**अहिंसा**", कानपुर से "**वर्तमान**" और "**लोकमत**" पटना से "**प्रजाबंधु**" तथा "**देश**" आदि पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। इस काल में पत्र-पत्रिकाएं चाहे वे धार्मिक हो, राजनीतिक हो सामाजिक हो या साहित्यिक सभी ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना अमूल्य योगदान दिया।

पत्रकारिता का क्रांति काल -

महात्मा गांधी के सक्षम नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का संघर्ष तीव्र हो चुका था। इस संघर्ष को तीव्र करने का श्रेय हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को जाता है। "आज", "भविष्य", "प्रताप", "प्रभा", "वर्तमान", "चांद", "माधुरी", "सैनिक", "समय", "हंस", "युग" आदि अनेक पत्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन को ओज प्रदान किया। क्रांतिकाल की हिंदी पत्रकारिता को अग्निवर्षा की पत्रकारिता का काल भी कहा जाता है। गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा एवं सहयोग से सन 1931 तक चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन तथा अशफाक खां, सुखदेव, राजगुरु आदि ने उनके राष्ट्रभक्ति की भावना एवं क्रांतिकारी कार्यों को अंजाम दिया जिसके धमाके की गूंज ब्रिटिश सरकार के एसेम्बली तक पहुंच चुकी थी।

राम प्रसाद बिस्मिल की पंक्तियां क्रांतिकारियों के प्रेरणा गीत बन चुकी थी।

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,

देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।"

झंडा गान जो उस समय आजादी की क्रांति का सिंहनाद बना। श्यामलाल गुप्त "**पार्षद**" द्वारा रचित "**झंडा गीत**" इस गीत का प्रकाशन 1925 ई. में "**प्रताप**" में गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा से प्रकाशित हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में जोश एवं ओज का संचार करने वाला गीत -

" झंडा ऊंचा रहे हमारा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

झंडा ऊंचा रहे हमारा

सदा शक्ति बरसाने वाला

वीरों को हरसाने वाला

मातृभूमि का तन-मन सारा

झंडा ऊंचा रहे हमारा।"

"आज" दैनिक पत्र का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में –

काशी के बाबू शिवप्रसाद गुप्त हिंदी में ऐसे दैनिक पत्र की कल्पना लेकर विदेश भ्रमण से लौटे जो "**लन्दन टाइम्स**" जैसा प्रभावशाली हो। 15 सितम्बर 1920 ई. को "आज" का प्रकाशन हुआ। लोकमान्य तिलक की प्रेरणा से जन्मा "**आज**" महात्मा गांधी के आंदोलनों का अग्रदूत बनकर उभरा। सत्याग्रहियों के विचारों एवं मतों को छापने का साहस केवल "आज" ने ही किया। ब्रिटिश सरकार के कोप व दमन के कारण "आज" का प्रकाशन रोकना पड़ा। "आज" के अवलेख लेखकों में प्रमुख सर्वश्री सम्पूर्णानंद, आचार्य नरेंद्र देव और श्री प्रकाश थे। स्वतंत्रता संग्राम को गति प्रदान करने में "आज" का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 13 अप्रैल 1922 के अंक में छपे "तथ्य" "आज" स्मरण रखिए

जलियांवाला बाग दिवस है

अपना कर्तव्य पालन कीजिए

कार-बार बन्द रखिए

उपवास कीजिए

ईश्वरा राघन कीजिए

राष्ट्र कार्य को करने में

दृढ़ प्रतिज्ञ सत्य संकल्प होइए।

इसी प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने अपना योगदान दिया। स्वतंत्रता के आंदोलन से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक अनेक आंदोलन हुए। इन सभी आंदोलनों का प्रचार-प्रसार प्रमुख रूप से पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ।

पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से नवजागरण एवं राष्ट्रवादी भावना का विकास हुआ। आम जनता स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग प्रदान करने लगी। ये सब पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सम्भव हो पाया। पत्रकारिता के द्वारा राष्ट्रवाद को नया आयाम प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष –

भारतीय राष्ट्रवाद को जीवित रखने एवं विकसित करने में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। आरंभ से ही हिंदी पत्रकारिता अपने ऊँचे आदर्शों एवं अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती आ रही है। हमेशा से राष्ट्रीयता, समाज हित, लोक जागरण ही पत्रकारिता का मुख्य स्वर रहा है। राष्ट्र के सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिये पत्रकारों ने अनेक यातनाएँ सही हैं, परन्तु अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। स्वतंत्रता पूर्व से ही हिंदी पत्रकारिता राष्ट्रीय आंदोलन को गति, शक्ति तथा दिशा प्रदान करते आये हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ किसी भी युग की ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक घटनाओं को न केवल स्वयं अपने में संजोए हुए रहती हैं, बल्कि उनका एक विशिष्ट ढंग से मूल्यांकन और विश्लेषण भी करती हैं। पत्र-पत्रिकाएँ समाज का एक ऐसा दर्पण है, जिससे समाज का प्रतिबिंब स्पष्ट एवं मुखर होकर स्वयं ही बोलने लगता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

01. डॉ. कुमार अवधेश, हिंदी की साहित्य पत्रकारिता।
02. शर्मा, ओ.पी., पत्रकारिता और उसके विभिन्न स्वरूप।
03. डॉ. मिश्र, कृष्ण बिहारी, हिंदी पत्रकारिता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली।
04. डॉ. मिश्र, राजेन्द्र, हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता, हिंदी साहित्य निकेतन प्रकाशन बिजनौर (उ.प्र.)।
05. डॉ. तिवारी अर्जुन, हिंदी पत्रकारिता का वृहत इतिहास वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 2022।
06. डॉ. विश्वकर्मा तेजस, भारतेंदु साहित्य में पत्रकारिता का समन्वय प्रकाशित लेख, विश्व संग्राम में।
07. सिंह शेखर दिलीप, हिंदी पत्रकारिता और काशी।
08. डॉ. मीना, स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी।